तारीख : 03 फरवरी, 2014

क्या तीसरा मोर्चा फिर बनेगा?

- अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

क्या तीसरा मोर्चा फिर बनेगा ? तीसरा मोर्चा बनाने की राय कौन दे रहा है ? तीसरा मोर्चा बनाने की राय असल में जनता दल (यू) और समाजवादी पार्टी दे रही हैं। दोनों के सामने पहचान का गंभीर संकट पैदा हो गया है। जद (यू) भाजपा के साथ लंबे समय तक चले गठबंधन को तोड़ चुकी है और उसे इस लोक सभा चुनाव में बाहर होने की संभावना दिखाई दे रही है। पार्टी का दायरा बिहार तक ही सीमित है। उसके नेताओं ने सोच समझकर यह जोखिम उठाया था। उन्हें उम्मीद थी कि लालू प्रसाद यादव जेल में रहेंगे और अल्पसंख्यकों के वोट उसके पक्ष में पड़ जाएंगे। राजद के नेता को जमानत होने के बाद उसके मंसूबों पर पानी फिर चुका है। उत्तर प्रदेश में सपा यूपीए–1 और यूपीए–2 को सत्ता में बनाए रखने के लिए जिम्मेदार है। सभी अत्यन्त महत्वपूर्ण मौकों पर उसने यूपीए की मदद की है। बदले में उसे सीबीआई से मदद मिली और उसके वरिष्ठ नेताओं और परिवार के सदस्यों के खिलाफ दर्ज भ्रष्टाचार के मामलों को कमजोर कर दिया गया। गैर कांग्रेसी मुद्दे पर समाजवादी पार्टी के लिए एक विश्वसनीय राजनैतिक हस्ती को पेश करना काफी कठिन हो रहा है। उसकी राजनैतिक रणनीति हमेशा से दो वोट बैंकों–यादव और मुसलमानों पर आधारित होती है। पहले के कुछ वोट नरेन्द्र मोदी के पक्ष में पड़ेंगे और दूसरे का मुजफ्फरनगर दंगों के बाद पूरी तरह मोहभंग हो चुका है। जद(यू) और सपा दोनों को अपने–अपने प्रभाव वाले क्षेत्रों में हारने का अंदेशा है। हारने वाले सिर्फ इसलिए विजयी नहीं हो सकते क्योंकि वे 'हारने वालों का एक मोर्चा' बना लेंगे।

तीसरे मोर्चे की प्रमुख आवश्यकता कांग्रेस और भाजपा से बराबर दूरी बनाना है। जद (यू) और समाजवादी पार्टी इस बारे में दावा कैसे करेंगी? कांग्रेस का मित्र बनने की कोशिश में जद (यू) राजद को खो चुकी है। समाजवादी पार्टी दस वर्ष से यूपीए को सत्ता में बनाए हुए है।

निश्चित तौर पर कुछ राज्यों में क्षेत्रीय पार्टियां हैं। इन क्षेत्रीय दलों का अपना आधार है। अपने–अपने राज्यों में इन्हें लोक सभा चुनाव में पर्याप्त सीटें मिल सकती हैं। ये क्षेत्रीय दल गैर कांग्रेस दलों का स्थान लेते हैं। पहले इनकी पहचान एनडीए से होती रही है। इनकी राजनीति कांग्रेस के साथ नाता जोड़ ही नहीं सकती। इससे उनकी अपनी राजनैतिक पहचान खत्म हो जाएगी। कांग्रेस किसी भी सूरत में ऐसी स्थिति की तरफ बढ़ती नहीं दिखाई दे रही है जहां वह एक विश्वसनीय राजनैतिक गठबंधन के केन्द्र में आ सके। ज्यादा से ज्यादा वह बाहरी भूमिका अदा कर सकती है लेकिन उसकी कोई कारगर भूमिका नहीं होगी।

तीसरे मोर्चे में तृणमूल बनाम वाम, सपा बनाम बसपा, अन्ना द्रमुक बनाम द्रमुक और जद(यू) बनाम राजद जैसे विरोधाभास हैं। ये एक राजनैतिक विरोधाभास कायम कर देंगे जिसे तीसरा मोर्चा कभी नहीं सुलझा पाएगा। तीसरे मोर्चे का कोई सैद्धांतिक सामन्जस्य नहीं है। राजनैतिक निकटता के साथ इसका कोई केन्द्र नहीं है जो मोर्चे को स्थिरता प्रदान कर सके।

कांग्रेस के नेतृत्व में यूपीए से मोहभंग स्पष्ट दिखाई दे रहा है। वर्तमान गड़बड़ी से अर्थव्यवस्था को बाहर निकालने के लिए सामन्जस्य, निश्चितता और राजनैतिक स्थिरता की आवश्यकता है। तीसरा मोर्चा इन सभी के उलट है। तीसरे मोर्चे के गठन का शोर जितना ज्यादा होगा, उतना ही नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए सरकार को चुनने की इच्छा और अधिक प्रबल होती जाएगी जो अपने दम पर सरकार बनाने में सक्षम है।

★★★★★